**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22**
**Received: 05-10-2020; Accepted: 20-10-2020; Published: 08-11-2020**
**www.hindijournal.com**
**Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 15-18**

# निराला के काव्य में सामाजिक चेतना

**रवींद्र कुमार तिवारी**

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सन्त विरागी बाबा पी०जी० कॉलेज, घाटमपुर, कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश, भारत

**प्रस्तावना**

छायावादी चतुष्टयी में महाकवि निराला अप्रतिम हैं। 1920 से गतिमान उनकी काव्य-यात्रा 1962 में विरामित हुई। इस कालावधि में निरालाजी के बारह ग्रन्थों ने प्राणजयिता प्राप्त की, जो निम्नवत् हैं-अनामिका-1923, परिमल-1929, तुलसीदास-1934, गीतिका 1935, कुकुरमुत्ता-1940, अणिमा-1943, बेला, नये पत्ते-1946, अर्चना-1950, आराधना, गीत कुंज -1954, सान्ध्य की कली (मरणोपरान्त) एवं उत्रार्द्ध में संकलित स्फुट रचनाएँ। रचनाओं की श्रेष्ठता निराला जी को अमरत्व प्रदान करती हैं। अपने कृतित्व से निराला जी ने अनेक युग प्रवृत्तियों को जीवन्त किया। इन्होंने न केवल छायावाद के प्रवर्तन में महती भूमिका का निर्वाह किया, वरन् प्रगतिवाद-प्रयोगवाद और नयी कविता के भी पुरोधा पुरूष बने। छन्द वैविध्य के जन्मदाता एवं नई भाषा के नवप्रस्तोता निराला जी का जीवन कंटकाकीर्ण था। निराला जी के जीवन और लेखन दोनों पर विवेकान्द के वेदान्त दर्शन का व्यापक प्रभाव था।

निराला जी सैद्धान्तिक एंव व्यवहारिक दोनों ही रूपों में सामाजिकता से सम्बद्ध रहे हैं। उनका विश्व मानवतावाद इसी सामाजिक चिन्तन का बृहत्तर रूप है, जिसे निराला की व्यापक अद्वैतवादी पृष्ठभूमि प्राप्त हुई है। उनका अद्वैतवाद दरिद्र नारायन की उपासना से फलित है। वे जन कवि थे। जन-चेतना को जाग्रत करना वे कवि-कर्म मानते हैं। वे स्वयं इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि उनका जीवन तो शोषित-पीड़ित जनता का जीवन है उनके शब्दों में-

जनता के हृदय जिया
जीवन विष विषम लिया ।। [1]

निराला साहित्य में सामाजिक भावना जन-कल्याण मूलक है। सर्वजन कल्याण तथा विश्व-कल्याण निराला साहित्य का अभीष्ट है।

निराला का "सोऽहं" उनकी वेदान्तीय साधना का परिणाम है। असत्य, अन्याय, शोषण, मिथ्याचार, भेदभाव, सामाजिक-धार्मिक असमानता, आडम्बर तथा मिथ्या विश्वासों के प्रति अविराम जीवन्त संघर्ष उनके साहित्य का लक्ष्य है। निराला के व्यक्तित्व का विकास गहरी सांसारिक विडम्बनाओं की गोद में हुआ था। उनका सम्पूर्ण जीवन सांसारिक दृष्टि से असफल, दुःखद, अव्यवस्थित एवं अतिशय अव्यवहारिक रहा है, जिसका मूलाधार उनकी आर्थिक विपन्नता थी। संसार के महान् कलाकारो के जीवन में जितने विडम्बनाओं के महा तूफान आए, निराला भी उस पंक्ति के गहरी आक्रामक और संघातिक विडम्बनाओं को सहन करने वाले अडिग कश्ती हैं। निराला ने एक विवश कटु यथार्थ की तरह ही इन विडम्बनाओं को वाणी दी है। उनकी वैयक्तिक पीड़ा में जन-पीड़ा की सफल अभिव्यक्ति मिलती है

"मरा हू हजार मरण
पाई तब चरण शरण
तथा
व्यर्थ प्रार्थना जैसे अब है
पंजर पिंजरकर से ।" [2]

निराला का मानना है कि संसार के मनुष्यों के लिए दूसरे के सहयोग की आवश्यकता है, वियोग की नहीं। उनका यह भाव उनकी "चित्त शुद्धि" नामक काव्य-पंक्तियों में अभिव्यक्त है -

"ईश्वर मज्जित
शुचि चन्दन वन्दन सुन्दर
मन्दर सज्जित
मेरे गगन - मगन - मन में अयि
किरणमयी विचरो ।" [3]

निराला जी ने वेदान्त को ही हमारी सामाजिक संरचना और उसमें वर्णाश्रम धर्म की प्रतिष्ठा का स्रोत माना है। क्योंकि यही वह दर्शन है जो सहयोग, समृद्धि और मानवता की ओर ले जाता है। वेदान्त दर्शन का सामाजिक व्यवहार भारत में ही सम्भव है, क्योंकि विश्व का यही एक देश है जो भोग नही, त्याग में विश्वास करता है। इस देश में पिता-पुत्र, पति-पत्नी, गुरू-शिष्य संबंध के सभी स्तरों पर त्याग का आदर्श फैला हुआ है, इसीलिए भारत, भारतीय धर्म तथा भारत का जीवन विश्व से आत्मीय सहयोग स्थापित करता है।

निराला के सामाजिक चेतना का साक्षात्कार उनके सम्पूर्ण साहित्य में परिलक्षित होता है। वह सदैव पीड़ित-शोषित जनता की भावनाओं के उद्गाता बने रहे। दरिद्र नारायण की संवरण शीलता उनके उदात्त विचार का परिचायक है। उनकी लोक विधायी ज्ञान शक्ति ने अनेक ऐसे काव्य-कृतियों को जन्म दिया जिनमें अभागे शोषितों का जीवन-दर्शन समग्र रूप में प्रतिफलित हुआ है। भिक्षुक, विधवा, वह तोड़ती पत्थर तथा दीन आदि तत्कालीन समाज के न सिर्फ यथार्थ चित्र हैं वरन् उनकी सामाजिक चेतना के प्रत्यक्ष प्रमाण भी हैं। निराला की लोक मंगल दृष्टि का प्रवाह उनकी सामाजिक चेतना को इन पंक्तियो में प्रतिष्ठित करता है

छोड़ जीवन यों न मलो ।
यह भी तुम जैसा सुन्दर
तुम भी अपनी ही डालो पर फूलो और फलो ।[4]

निराला जी की सामाजिक चेतना का आभास उनके मानव केन्द्रित जीवन दर्शन में सर्वत्र दिखाई देता है। मानव उनकी जीवन दृष्टि में ब्रह्म है जिससे बड़ा अन्य कुछ नही है। उनके जीवन दर्शन में जाति, धर्म, सम्प्रदाय, देश आदि की मान्यताए मानव को विभाजित नही कर पाती हैं। निराला का सर्वव्याप्त यह विराट मानव ही उनके सामाजिक चेतना को उनके जीवन तथा साहित्य में प्रतिष्ठा प्रदान करता है जो देश काल की सीमाओं को पार कर मानव-मानव में प्रेम, समता तथा सहयोग-सामंजस्य की स्थापना करता है। इसीलिए निराला काव्य में सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति समादर व्यक्त हुआ है क्योंकि उन्होंने राजसिहांसन तथा उसकी संकीर्ण किन्तु वैभवशाली प्रतिष्ठा को त्याग कर एक साधारण स्त्री से विवाह किया। सम्राट अष्टम के प्रति कविता में निराला ने इसी भावना को व्यक्त किया है-

मानव मानव से नहीं भिन्न
निश्चय ही श्वेत, कृष्ण अथवा
वह नहीं क्लिन्न भेद कर पंक
निकलता कमल जो मानव को
वह निष्कलंक
हो कोई सर"। [5]

निराला की "अर्चना" काव्य पंक्तियों में भी उनकी सामाजिक चेतना एंव विश्व मानवतावादी दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है -

जल-थल-नभ आनन्द भास है
किसी विश्वमय का विकास है
सलिल अनिल उर्मिल विलास है।
निस्तल-गीति प्रीति की तालियॉ। [6]

निराला ने अपनी रचना "आराधना" में एक ऐसे समाज की संकल्पना की है जो अद्वैतवादी हो जहाँ समरसता का वास हो। वहीं विराट मानव का निवास हो। वे ऐसे स्वर्ग लोक के आकांक्षी हैं-

दूर हो दुरित सुख सरित फूटे बहे,
विश्व होकर रहे स्वर्ग का सुस्थान।[7]

नर को 'नरक त्रास' से मुक्त करने का उनका आग्रह उनकी सामाजिक चेतना का प्रतिफलन है-

मॉ अपने आलोक निखारो
नर को नरक-त्रास से वारो,
विपुल दिशावधि शून्य वर्ग जन,
व्याधि शयन जर्जर मानव-मन,
ज्ञान गगन से निर्जर जीवन,
करूणा करो उतारो, तारो।
स्वर्ण धरा के कर तुम धारो। [8]

निराला ने अपने "अधिवास" कविता में लिखा है कि मैं मोक्ष मार्गी बन रहा था परन्तु उसी समय मुझे दुःखी भाई दिखाई दिया। मै उसमें सेवारत हो गया और माया ने मुझे आबद्ध कर लिया। मोक्ष का मार्ग मैंने त्याग दिया क्योंकि मुझे मोक्ष कल्पना लोक को न प्राप्त होकर उसकी सेवा से प्रत्यक्ष प्राप्त हो गया। यही निराला जी के सामाजिक चेतना का विशिष्ट प्रयाण है-

"मैने मैं शैली अपनाई।
देखा एक दुःखी निजभाई,
दुःख की छाया पड़ी हृदय में मेरी,
झट उमड़ वेदना आयी।"[9]

मार्ग में भिक्षुक को देखकर उनका भाव प्रवण हृदय द्रवीभूत हो उठता है। उनका सामाजिक दर्शन जागरूक हो जाता है वह उसकी दशा से एकाकार होते हुये कहते हैं-

ठहरो हमारे हृदय में है अमृत, मै सींच दूँगा
अभिमन्यु जैसे हो सकोगे तुम,
तुम्हारा दुःख मैं अपने हृदय खींच लूगा। [10]

निराला जी शोषित जनता को सामाजिक न्याय के लिये संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं जो उनकी सामाजिक चेतना का प्रभाव है। इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ने वाली मजदूरनी युवती के ऊपर कवि की दृष्टि टिक जाती है। उसकी निरीहता और विपन्नता कवि के हृदय को इतना द्रवीभूत कर देता है कि महाकवि वाल्मीकि की तरह काव्य स्रोत प्रवाहमान हो उठता है -

नहीं छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार
श्याम तन भर बॅधा यौवन
नत नयन, प्रिय कर्मरत मन
गुरू हथौड़ा
करती बार-बार प्रहार
सामने तरू मालिका अट्टालिका प्राकार। [11]

निराला जी ने अपनी काव्य कृति 'सरोज-स्मृति' में भी कान्य कुब्ज ब्राह्मण समाज को सामाजिक वैषम्य पर प्रहार करते हुये तीखे व्यंग्यात्मक शब्दों में अपनी पुत्री सरोज के विवाह प्रसंग में लिखा है -

ये काव्य कुब्ज-कुल कुलांगार, खाकर पतल में करे छेद
इनके कर कन्या, अर्थ खेद,
इस विषम बेलि में विष ही फल, यह दग्ध मरूस्थल-नही सुजल। [12]

वे समाज को वैवाहिक विद्रुपताओं से भी मुक्ति का मार्ग दिखाना चाहते हैं। जिसकी चर्चा वे स्थान-2 पर सरोज स्मृति में करते हैं-

"तुम करो ब्याह, तोड़ता नियम मैं सामाजिक योग के प्रथम।
लग्न के पढ़ूगा स्वंय मंत्र, यदि पंडित जी होंगे स्वतंत्र।" [13]

निराला ने अपने साहित्य में नारी की सामाजिक स्थिति को विशिष्ट प्रतिष्ठा प्रदान की है। नारी के प्रति निराला में अनन्य आस्था के दर्शन होते हैं। अपनी काव्य कृति 'पंचवटी प्रसंग' तथा 'राम की शक्ति पूजा' में निराला ने भारतीय नारी की साधना, त्याग तथा सौन्दर्य शुचिता का वर्णन विशिष्ट रूप से किया है। निराला की सामाजिक विचारणा अद्वैतवादी धरातल पर अधिकतम समानता की विचारणा है। 'कुकरमुत्ता' में गोली तथा बहार की मित्रता तथा 'सुकुल की बीबी' में हिन्दु मॉ और मुस्लिम पिता से पैदा पुष्कर या पुखराज वर्ग भेद तथा वर्ग संघर्ष पर एक करारी चोट हैं।

'अणिमा' की 'स्वामी प्रेमानन्द जी महाराज' "अनामिका" की सम्राट अष्टम एडवर्ड के प्रति, 'खड़हर के प्रति', 'दिल्ली', "तोड़ती पत्थर", "सरोज स्मृति", "सेवा प्रारम्भ" जैसी कितनी ही रचनाओं का उल्लेख किया जा सकता है, जो सामाजिक चेतना का जीता जागता उदाहरण हैं।

शोषित समाज की दुरावस्था निराला के मन-मस्तिष्क को झकझोर देती है, जहाँ कहीं भी इन्होंने दलितों के हित को अनिष्टकारी रूप से देखा, वहीं उनका लोक कल्याण रूप मुखरित हो गया। "नये पत्ते" की रचना "रानी और कानी" शोषित वर्ग की अकथ कहानी कहती है-

बीनती है काड़ती है, कूटती है, पीसती है
डलियां के सीले अपने रूखे हाथों मीसती है
घर बुहारती है, करकट फेंकती है,
और घड़ो भरती है पानी ।14

उनकी रचना "बेला" में सामाजिक वैषम्य का हृदयहारी वर्णन है। पेट की बुभुक्षा की आतुरता कवि दृष्टि को बलात् खींच लेती है -

"वेष - रूखे अधर - सूखे
पेट - भूखे आज आए
हीन- जीवन दीन चितवन
क्षीण आलम्बन बनाये"। 15

कृषक समाज के प्रति व्यथित निराला जी सामाजिक चेतना के प्रसार हेतु पूँजी पतियों से अपनी पूँजी को देश में शोषित वर्ग में बॉटने का आग्रह करते हैं।

'बैंक किसानो का खुलवाओ'
देश में बॅट जाये,
जो पूँजी तुम्हारी मिल में है। 16

ग्रामीण व्यवस्था और लोक जीवन में कवि की अगाध अनुरक्ति है। इनका विकास उनकी कटिबद्धता है। निराला की सामाजिक चेतना के प्रभारी स्वर-

"जल्द जल्द चलो कदम बढ़ाओं
धोबी, पासी, चमार सबकी लेगेगी पाठशाला ।
रात के अंधेरे में खोलेगें जमींदार की हवेली का ताला
एक पाठ पढ़ो फिर टाट बिछाओं ।17

यह सर्व विदित है कि सामाजिक वैषम्य का मूल- वर्ग भेद एवं जाति भेद है। निराला अपनी सामाजिक समरसता और अद्धैतवादी दर्शन का चित्रण इस रूप में करते हैं-

"बम्हन का लड़का
मैं उसको प्यार करता हूँ
जाति का कहारिन वह
मेरे घर का पनिहारिन वह
आती है होते तड़का
उसके पीछे मैं मरता हू।"18

## निष्कर्ष

स्पष्ट है कि निराला-काव्य में व्यक्त सामाजिक चेतना बड़ी महत्वपूर्ण है उन्होंने व्यक्तियों और समाज की बारीकियों का विवेचन किया है। सामाजिक संगठन विशेषतः संयुक्त परिवार, विवाह संस्था, सफल दाम्पत्य और नारी की स्थिति पर निराला ने गहन चिन्तन किया है। सर्वहारा के प्रति मुख्यतः किसान, मजदूर की दयनीय स्थिति से वे संतप्त दिखायी देते हैं, जमींदारो, पूॅजीपतियो और सताधीशो के प्रति उनके मन में गहरा आक्रोश भी रहा है। वे व्यवस्था विरोधी और सुधारक दोनों हैं। दलित चेतना के क्षेत्र में उन्होंने जो पहल की थी वह आज भी अनुकरणीय है। वस्तुतः अपनी सामाजिक चेतना दृष्टि के कारण ही निराला युगद्रष्टा कहलाये।

वैसे देखा जाय तो निराला-साहित्य की मूल-प्रेरणा ही वर्ग भेद एवं वर्ग संघर्ष से ओत-प्रोत है। उनके निबंधो, उपन्यासों एवं कहानियों में भी सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों का चित्रण हुआ है। निराला ने अपने निबंधो जैसे- तुलसी कृत रामायण में 'अद्वैततत्व', वेदान्त केशरी 'स्वामी विवेकानन्द' युगावतार भगवान श्री कृष्ण आदि में भी वर्ग-संघर्ष की सामाजिक चेतना को समाप्त करने का निर्देश किया है।

सामाजिक वैषम्य पर करारी चोट उनके उपन्यास 'अप्सरा' में स्पष्ट दिखायी देता है। उपन्यास की नायिका वेश्या-पुत्री कनक का विवाह समाज के संभ्रांत नवयुवक राजकुमार से होता है। 'अलका' उपन्यास मध्य वर्गीय सामाजिक जीवन को प्रकट करता है। इसमें राजा और प्रजा, जमींदार और किसान, विदेशी शासक और सुधारवादी वर्ग आदि के संघर्ष को प्रतिष्ठा मिली है। अपने ऐतिहासिक उपन्यास 'प्रभावती' में निराला जी ने तद्युगीन समाज का सूक्ष्म चित्रण किया है। इसी क्रम में उनका 'निरूपमा' उपन्यास भी है जिसमें बंग समाज का यथार्थ चित्रण है। 'चमेली', 'चोटी की पकड़', 'काले कारनामे' तथा 'अपूर्ण इन्दुलेखा' में भी सामाजिक जीवन को ही मुख्य रूप से चित्रित किया गया है।

इसी प्रकार निराला की सामाजिक कहानियॉ भी सामाजिक जीवन को रूपायित करती हैं निर्धन एवं उपेक्षित वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाले 'कुल्लीभाट' और 'बिल्लेसुर बकरिहा' में निराला ने अनेक सामाजिक अच्छाईयों और बुराईयां को गढ़ा है। निराला की सामाजिक कहानियॉ- 'पदमा और लिली', 'ज्योतिर्मयी', 'कमला', 'श्यामा', 'राजा साहब को ठेगा दिखाया', 'परिवर्तन', 'हिरनी', 'न्याय', 'श्रीमती गजानन्द', 'सखी', 'क्या देखा', 'सफलता' 'प्रेमिका परिचय' तथा 'जानकी' आदि उनकी यथार्थ सामाजिक चेतना को चित्रित करती हैं।

## सन्दर्भ सूची


1. निराला आत्महन्ता आस्था-डॉ0 दूधनाथ सिंह पृष्ठ-15
2. निरालाः आत्महन्ता आस्था-डॉ0 दूधनाथ सिंह पृष्ठ - 15
3. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' : परिमल-पृष्ठ सं0-34
4. निराला समग्रः प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित-पृष्ठ-12
5. 5 - निराला- अनामिका पृष्ठ सख्या - 19
6. निराला- अर्चना पृष्ठ स0-86
7. निराला - आराधना पृष्ठ सं0 34
8. निराला- अर्चना - पृष्ठ स0- 124
9. निराला समग्र : प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित पृष्ठ स0-13
10. निराला समग्र : प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित पृष्ठ स0-14
11. निराला की कविताएँ और काव्यभाषा : डॉ0 रेखा खरे पृष्ठ-94-95
12. प्रसाद निराला पन्त महादेवी की श्रेष्ठ रचनायें-सरोज-स्मृति पृष्ठ सं0 144 प्रकाशनः लोक भारती संस्करण-9

13. प्रसाद निराला पन्त महादेवी की श्रेष्ठ रचनायें-सरोज-स्मृति पृष्ठ सं0 146 प्रकाशनः लोक भारती संस्करण-9
14. निराला की कविताए एवं काव्यभाषा : डॉ0 रेखा खरे- पृष्ठ स0- 98
15. निराला की कविताए एवं काव्यभाषा : डॉ0 रेखा खरे-पृष्ठ स0-186
16. निराला समग्र : प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित पृष्ठ स0-14
17. निराला समग्र : प्रो0 सूर्य प्रसाद दीक्षित पृष्ठ स0-14
18ण निराला की कविताए एवं काव्यभाषा : डॉ0 रेखा खरे- पृष्ठ स0- 190